हिन्दी साहित्य

को

लेखिकाओं का योगदान

संपा. उषा यादव

अनुक्रम

1.	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में अभिव्यक्ति दलित चेतना उषा यादव	13
2.	शैक्षणिक समस्याएं : सुशीला टाकभौरे की कहानियों में डॉ. नरेश कुमार सिहाग	18
3.	संत महिलाओं का हिन्दी साहित्य को योगदान गजानन्द मीणा	22
4.	महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना डॉ. अमनदीप कौर	32
5.	प्रवासी लेखिकाओं का हिन्दी साहित्य को योगदान अनामिका भुसाल	38
6.	बदलती सोच का आईना-दोहरा अभिशाप डॉ. अनिला मिश्रा	43
7.	शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी-जीवन का चित्रण डॉ. बिजेंद्र कुमार	50
8.	प्रभा खेतान के उपन्यासों में व्यक्त नारी चेतना बिन्दु के. पिल्लाई	58
9.	डॉ. प्रभा पंत की कहानियों में विविध आयाम चंद्रावती जोशी	64
10.	नारी अंतर्मन की झलक : उषा प्रियम्वदा की कहानियों में डॉ. अनिता पाटिल	73
11.	प्रवासी लेखिकाओं का हिंदी साहित्य को योगदान डॉ. सर्वमंगल स कमतगी	79
12.	महिला काव्य लेखन और सामाजिक सरोकार डॉ. शारदा प्रसाद	83
13.	21 वीं सदी की महिला साहित्यकार और साहित्य डॉ. गीतू खन्ना	91

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह वेदना

डॉ. अमनदीप कौर
शोधार्थी
ईमेल –amanmaan956-am@gmail.com

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से है। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती है। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में एक होने के कारण उन्हें आधुनिक 'मीरा' के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 26 मार्च 1907 को फरूखाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। महोदवी जी प्रतिभाशाली कवयित्री के साथ–साथ एक अच्छी गद्य लेखिका और संगीत में भी सिद्धहस्त थी। इसलिए कवि निराला ने उन्हें हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती'भी कहा है। महादेवी की प्रमुख काव्य रचनाएं नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, प्रथम आयाम, यामा, संधिनी, अग्निरेखा आदि है। आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरी है।

हिंदी साहित्य में 'वेदना' छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है जिसे महादेवी जी ने अपने काव्य के केंद्र में रखा है। महादेवी वर्मा के काव्य का प्रमुख स्वर 'वेदना' है। उनके काव्य की मूल प्रेरणा उनके हृदय का 'विषाद' और 'वेदना' है। अपने काव्य में विरह भाव की अभिव्यक्ति के कारण उन्हें 'आधुनिक मीरा' भी कहा जाता है। इनके काव्य में वेदना की प्रधानता है। महादेवी जी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार रूदन को देखा, परखा और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की है।

कवयित्री को आधुनिक हिंदी साहित्य में 'प्रेम' पीड़ा की गायिका भी कहा जाता है। उनके गीतों का अधिकारिक विषय 'प्रेम' है परंतु प्रेम की सार्थकता उन्होंने मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों से अधिक विरह की पीड़ा में

तलाश की। महादेवी विरह–वेदना की पराकाष्ठा को मधुमय पीड़ा कहती है। इसीलिए वे प्रिय से मिलन को ठुकराकर चिर वियोग में खुश रहना चाहती है, वह कहती है–

"मिलन का नाम मत लो,
मैं विरह में चिर हूँ।"[1]

वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे हैं। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। इसलिए उन्हें 'पीड़ावाद' की कवयित्री कहा गया है।

महादेवी की वेदनानुभूति उनके हृदय और आत्मा का सौंदर्य है। उन्होंने विरह का चरमोत्कर्ष अपने काव्य का समय में अभिव्यक्त किया है। उनका दुख–सुख की अतिशयता का ही परिणाम है। उन्होंने सुख से अधिक्य के कारण पीड़ा को आनंदमय मान लिया है। वे जीवन भर आंसुओं की माला गुँथना ही नहीं चाहती, अपितु सुख को आत्मसात करना चाहती है। उसे जीवन के एक कोने में बंद नहीं करना चाहती। अतृप्त प्रेम की पीड़ा का मार्मिक चित्रांकन इनके काव्य में हुआ है। वे पीड़ा को ही अपना जीवन मानती हैं–

"पर शेष नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की क्रीड़ा
तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुममें ढूंढूगी पीड़ा।"[2]

दुख या पीड़ा एक ऐसी उत्कृष्ट अनुभूति है जो हमें सदा सचेत बनाए रखती है। इसीलिए महादेवी जी दुख के प्रति इतनी आसक्त है क्योंकि– "वे बिना दुख के लक्ष्य प्राप्ति संभव ही नहीं मानती।" महादेवी जी के दुखवाद पर बौद्ध दर्शन के "सर्व दुख–दुख" के सिद्धांत का गहरा प्रभाव है। इस सिद्धांत के संदर्भ में उन्होंने स्वयं कहा है–"बचपन से भगवान के प्रति एक भक्ति या अनुराग होने के कारण उनकी संसार को दुखात्मक समझे जाने वाले दर्शन से मेरा असमय ही परिचय हो गया था।"[3] यही कारण है कि बुद्ध की विश्वमंगल की कामना से उद्धरित करुणा उनके काव्य का प्राणतत्व बन गई है। तभी तो वह विरह रूपी कमल का जन्म वेदना में मानकर करुणा में उसका स्थायी निवास बताती है। महादेवी वर्मा अपने काव्य संग्रह 'नीरजा' में इस बात को स्पष्ट करते हुए कहती है–

"वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात
जीवन विरह का जलजात। ।"[4]

महादेवी वर्मा वेदना, पीड़ा, दुख एवं करुणा के माध्यम से विश्व

कल्याण की कामना रखती है। वेदना, महादेवी को इसलिए प्रिय है क्योंकि इसमें व्यक्ति का अभिमान समाप्त हो जाता है। वेदना की ज्वाला में गलने पर ही मानव मन की निष्ठुरता दूर हो पाती है। अपने दुख बोध के कारण ही उनमें करुणा का सागर उमड़ता है, बादलों की भांति वर्षा कर, पुष्पों की भांति सुवास देकर और दीपक की भांति स्वयं जलकर भी संसार को प्रकाशमान करने की भावना में वे डूबी रहती है। किसी अन्य के दुख में सम्मिलित होकर संवेदनात्मक स्तर पर जुडना ही कवयित्री के जीवन की सफलता का परिचय है। इसलिए वे अपने जीवन रूपी दीपक को मधुर–मधुर जलने के लिए कह रही है–

"मधुर–मधुर मेरे दीपक जल
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
प्रियतम का पथ आलोकित कर।"[5]

महादेवी जी की वेदना का कारण कुछ विद्वान भौतिक मानते हैं, तो कुछ विद्वान आध्यात्मिक। लेकिन महादेवी की 'काव्य–वेदना' आध्यात्मिक है। उसमें 'आत्मा का परमात्मा' के प्रति आकुल प्रणय निवेदन है।

कवि की आत्मा, मानों विश्व से बिछुड़ी हुई प्रेयसी की भांति अपने प्रियतम का स्मरण करती है। उसकी दृष्टि में विश्व की संपूर्ण प्राकृतिक शोभा सुषमा एक अनन्त आलोक की छायामात्र है। मीरा ने जिस प्रकार उस परम पुरूष की उपासना सगुण रूप में की थी, उसी प्रकार महादेवी जी ने अपनी भावनाओं में उसकी आराधना निर्गुण रूप में की है। महादेवी वर्मा की वेदना में मानवीय एवं आध्यात्मिक दोनों आधारभूमियों पर वेदना निरूपण किया गया है। उनकी सजग चेतना ईश्वरीय विरह की अनुभूति करते समय मानवीय व्यथा का विस्मरण नहीं कर पाती तथा मानवीय व्यथा का आकर्षण उन्हें अनन्त प्रिय से विमुख नहीं कर पाता।

महादेवी की दुखवादी अभिव्यक्ति नितान्त मौलिक है। कवयित्री ने अपनी व्यक्तिगत वेदना के माध्यम से लोकवेदना को मूर्तिमान करने का सफल प्रयत्न किया है। उन्होंने कहा है – व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है। और व्यक्तिगत दुख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है। दुख– पीड़ा और विषाद महादेवी के काव्य के मूल स्वर है और इन्हे सुख की अपेक्षा दुख अधिक प्रिय है। परन्तु इनमें विषाद का वह भाव नहीं है जो कर्म शक्ति को कुंठित कर देता हो। इनमें संयम और त्याग है तथा दूसरों का हित करने की प्रबल आकांक्षा है। इसी दृष्टि से कवयित्री ने 'यामा' की भूमिका में लिखा है– "दुख मेरे निकट जीवन

का एक ऐसा काव्य है, जो संसार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है, एक बूँद आँसू भी जीवन उर्वर बनाये बिना नही रहता। मनुष्य सुख को अकेला भोगना चाहता है पर दुख सबको बाँटकर। विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस तरह मिला देना जैसे एक बूँद समुद्र में मिल जाती है। सच्चे कवि का यही मोक्ष है।"[6]

महादेवी की वेदना में व्याकुलता भी दिखाई देती है। मुरझाये फूल को देखकर वे व्याकुल हो उठती है। उन्हें जीवन और जगत दुखमय तथा नश्वर प्रतीत होने लगता है। उनके हृदय में क्षोभ, असमर्थता एवं विवशता के कारण व्याकुलता उत्पन्न हो जाती है। वहां भी बुद्ध के विश्व मंगल की कामना से उद्भूत दुखवाद का ही प्रभाव परिलक्षित होता है। इसलिए वे कहती है–

"जब न तेरी ही दिशा पर
दुख हुआ संसार को
कौन रोयेगा सुमन
हमसे मनुज निःसार को।"[7]

हिन्दी साहित्य में जितने कवियों के काव्य में विषाद भावना है, इनमें से महादेवी की रचनाओं में करुणा, वेदना और विषाद का व्यापक चित्रण मिलता है। महादेवी जी ने अपनी कविताओं में विषाद भावना को मुख्य स्थान प्रदान किया है। यह विषाद उनके व्यक्तित्व में इतना घुल–मिल गया है कि वह विषादहीन जीवन की कल्पना ही नहीं कर पाती। कवयित्री के जीवन पर कभी दुख की छाया नहीं पड़ी। शायद इसलिए जीवन भी सुख का भोग करते–करते, उनमें दुख के प्रति उत्सुकता के साथ–साथ उसे जानने, परखने की लालसा बढ जाती है। और यह इतनी बढ़ी कि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन एवं जगत की समस्त वेदना को ही अपने भीतर समाविष्ट कर लिया। स्पष्ट है कि– "व्यक्ति को जीवन में जो कुछ नहीं मिलता उसमें उसे जानने की उत्कण्ठा एवं पाने की ललक बढ जाती है।"[8]

महोदवी के काव्य में विरह वेदना अत्यंत प्रवाहमान है, इसलिए प्रियतम की स्मृति भी शाश्वत है। जीवन में सुख क्षणिक है। कुछ समय के लिए सुख की छाया भले ही मनुष्य के लिए आनंदमय हो, किंतु मूलतः जीवन दुखों का ही क्रम है। इस जीवन दर्शन को अपने काव्य में अभिव्यक्त करने वाली महादेवी ने वेदना को ही हृदयगम कर लिया है। महादेवी वेदना की पराकाष्ठा को मधुमय पीड़ा कहती है और अपने आराध्य को भी दुख के अवगुंठन में छिपने के लिए कहती है। उनके प्रिय को भी तम के परदों में आना ही भाता है। महादेवी ने अपने जीवन में दुख के महत्व को भली भांति समझ लिया है।

उन्होंने यह भी मान लिया है कि दुख के द्वारा न केवल अपने जीवन को वरन मानवता को सुखी तथा समृद्ध बनाया जा सकता है। कवयित्री की कविताएं आतृक्रन्दन, हाहाकार और आत्मसंयम से बंध जाती है। वे अपने काव्य संग्रह 'संधिनी' में कहती है–

"मृग मरीचिका के चिर पथ पर,
सुख आता प्यासों के पग धार
रूद्र हृदय के पट लेता कर।"[9]

कवयित्री के दुखवाद को उसके सही परिप्रेक्ष्य में ही देखना चाहिए। उन्हें दुःखवाद का प्रचारक नहीं मानना चाहिए। महादेवी जी पार्थिव मिलन को महत्व न देकर सर्वत्र विरह और मिलन की आशा का उल्लेख करती है। उनके अनुसार वेदना दुखमूलक नहीं है, वह प्रिय है। इसलिए उनके काव्य में वेदना को इतना प्रधान पद मिला है और काव्य दुखवादी होते हुए भी एक अजीब गुंजन उत्पन्न करता है। जिसका सुन्दर उदाहरण कवयित्री के काव्य संग्रह 'यामा'में देखने को मिलता है–

"अश्रु से मधुकण लुटाता आ यहाँ मधुमास,
अश्रु ही की हाट बन आती करुण बरसात।
जीवन विरह का जलजात।"[10]

महादेवी की विरहानुभूति में गहन प्रेम का तत्व व्याप्त है। वे करुणा से ओत–प्रोत विरह की ऐसी कवयित्री है, जो अज्ञात प्रियतम की खोज में लीन है। अज्ञात प्रियतम के लिए तड़प और उससे दूर होने की पीड़ा उनके काव्य में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि यह वेदनातत्व ही है जो महादेवी को यथार्थ जगत से जोड़ता है। वस्तुतः दुख हमारे हृदय का प्रसार करता है और संपूर्ण विश्व को हमारा आत्मीय बना देता है। महादेवी जी वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर जीवन को सार्थक मानती है और वैयक्तिक दुख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। विरह का संगीत महादेवी जी की आत्मा को झंकृत करता है। वेदना इनके जीवन को प्रज्वलित करती है। साधारण व्यक्ति जीवन में सुख का साक्षात्कार करना चाहता है और दुखों का त्याग। किन्तु महादेवी जी के काव्य में इसके विपरीत स्थिति लक्षित होती है। जीवन की क्षणभंगुरता से त्रस्त महादेवी दुख के प्रति आकर्षित है। उनकी वेदना नीरस नहीं सरस है। उनकी वेदना संसार त्यागना नही चाहती।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महादेवी वर्मा की काव्य चेतना – डॉ. अरुणेन्द्र सिंह राठौर, पृ. 117
2. नीहार– महादेवी वर्मा, पृ. 38
3. रश्मि (भूमिका)– महादेवी वर्मा, पृ. 05
4. नीरजा – महादेवी वर्मा, पृ. 26
5. वही, पृ. 59
6. यामा (भूमिका) – महादेवी वर्मा, पृ. 03
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आ. रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 719
8. पूर्ववत, पृ. 112–113
9. संधिनी – महादेवी वर्मा, पृ. 54
10. यामा (भूमिका) – महादेवी वर्मा, पृ. 92